

पतिना सह दर्शनं संजातम् 33, 11. संजातकोप adj. *erzürnt* R. 3, 28, 14. °पाश ÇĀK. 32. °निर्वेद KATHĀS. 4, 26. °विश्रम्भ VID. 147. °वेपयुः BHĀG. P. 4, 17, 28. — 3) *werden*: गतासुरिव संज्ञे HARIV. 15925. R. 6, 37, 65. द्वा-दशवर्षा संज्ञे PAÑKĀT. 188, 20. स्वव्यापारपराङ्मुखः संजातः 32, 9. VET. 4, 9. 7, 9. BHATT. 6, 110. कियान्कालस्तवैवं स्थितस्य संजातः *wie viel Zeit ist verflossen, seitdem du so stehst?* PAÑKĀT. 242, 14. — 4) *gebären*: दिग्गजं चैव शङ्खाख्यं योना वै समजायत R. 3, 20, 27. — *caus. zeugen, gebären; bilden, bauen, erzeugen, hervorbringen, verursachen*: कश्यपस्त्वस्यामादित्यान्स-मनीजनत् MBh. 1, 3135. तस्यो संजनयामास कुरुम् 6633. HARIV. 1799. तस्यो संजनयो चक्र आत्मज्ञाम् BHĀG. P. 4, 28, 30. पुत्रान् — मत्तः संजनयिष्यथ R. 3, 20, 13. तत्र संजनयामास नानागाराणि MBh. 1, 4995. भिन्धनीकम् — द्वारं संजनयस्व नः 7, 1526. मत्स्यपरिवर्तनसंजनितकेन PAÑKĀT. 188, 10. तस्य सं-जनयन्कर्मम् BHĀG. 1, 12. (तेषाम्) भेदं संजनयिष्यति MBh. 5, 118. रतिम् R. 2, 95, 5. R. 2, 18. सुखम् SUÇR. 1, 243, 11. त्रासम् R. 3, 43, 35. HIT. III, 23. (जननयः) त्वया संजनितः MBh. 7, 3563.

— *अभिंसम् entstehen, sich zeigen*: अभिसंजातकृष HARIV. 13778.

— *प्रतिसम् dass.*: (डुःखम्) मनसि प्रतिसंजातम् R. 2, 22, 7.

1. जन् (von जन् g a ṇ a वृषादि zu P. 6, 1, 203. 1) m. a) *Geschöpf; Mensch; Person, Leute* (sowohl coll. als im pl.); *Geschlecht, Stamm*, = प्रजा, लोक AK. 3, 4, 2. 7, 34. H. 501. an. 2, 265. MED. n. 6. मानुषः RV. 1, 4, 48, 11. 70, 2 (1). 6, 2, 3. ज्योतिर्जनाय शश्वते 1, 36, 19. यज्ञा स्वधरे जन् मनुजा-तम् 45, 1. सुकृत् 166, 12. स इन्नैनं स त्रिंशस जन्मना स पुत्रैर्वीजं भरते धना नृभिः 2, 26, 3. अस्माकं वारं उत नो मयेना जनाश्च या पारयाच्छर्म या चं 1, 140, 12. जनस्य गोपाः 5, 11, 1. 3, 43, 5. कमा जन्ं चरति कासु वित्तु 6, 21, 4. 1, 93, 8. द्वा जना यातयन्त्ररं रोयते 9, 86, 42. प्र नू स मर्तः शर्वसा जनां अतिं तस्यै 1, 64, 13. 74, 5. 75, 3. 4. 81, 9. 102, 5. AV. 4, 5, 7. 5, 11, 4. 30, 2. 14, 2, 59. ÇAT. BR. 11, 4, 1, 4. 13, 3, 4, 15. KĀTJ. ÇR. 22, 1, 27. ÇĀÑEH. ÇR. 15, 19, 1. — *अकर्मणो हि जीवन्ति स्यावरा नेतेर जनाः die anderen d. i. die lebenden Geschöpfe* MBh. 3, 1204. नात्पसंनिचयः कश्चिदासीत्स्मिन् जनः पुरे R. 1, 6, 7. जनत्रयम् *drei Personen* 3, 4, 46. साहं वृषो पञ्च जना-न्यतिले DRAUP. 3, 5. यः — तं जनम् HIT. I, 73. ÇĀK. 121. प्राणाधिका वस-ति यत्र जनः प्रियो मे AMAR. 69. ओदकात्तात्स्मिन्ना जनाः अनुगतव्यः *eine ge- liebte Person* ÇĀK. 54, 21. समवाये जनस्य च M. 4, 108. आयुधीयं जनम् *die Soldaten* 7, 222. भवतु जनः सुखितो ममाथ सर्वः R. 6, 39, 32. जनस्तु सुम-हंस्तत्र बालवृद्धः समागतः 101, 33. जने मरुति *vor vielen Leuten* 2. म-रुजानसमापूर्णा 5, 12, 26. दुर्भिलाज्जनाः बुभुक्षापोडितः PAÑKĀT. 114, 4. सर्वो ऽपि जनः 121, 18. जनात्तदाकार्यं 256, 8. जनाय शुद्धात्तचराय RAGH. 3, 16. सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयो जनाः ऽन्यथा भर्तृमतो विशङ्कते *die Menschen, die Leute* ÇĀK. 114, 138. KATHĀS. 2, 47. BHĀG. P. 3, 5, 3. यत्किंचिदेनः कु-र्वन्ति मनोवाञ्छूर्तिभिर्जनाः M. 11, 241. रामो नाम जनैः श्रुतः R. 1, 1, 10. 5, 14. अक्षरारात्रिविदो जनाः M. 1, 73. 4, 22. PAÑKĀT. II, 47. 114, 5. VID. 177. जनकोषात्मगुप्तये *zum Schutz der Unterthanen, des Schatzes und seiner selbst* JĀṢ. 1, 320. स्वाम्यमात्यो जनः *König, Minister, Volk* 352. जनाः नरपतयश्च *die Völker und die Fürsten* VARĀH. BRH. S. 16, 41. Sehr häufig in comp. mit einer anderen Personenbezeichnung mit einem engeren Begriffe; sg. und pl.: प्रेष्यजन *Dienerschaft* M. 7, 125. सखी° N. 2, 5, 17, 24. बन्धु° 23. मुहञ्जन ÇĀK. 156. सपत्नी° 93. प्रमदा° HARIV. 4854. AMAR. 64. स्त्री° MĀLAV. 51, 7. शिशु° PAÑKĀT. 95, 17. शश्रू° RAGH. 14, 60. पथि-

क°-R. 3, 26. नृप°, शत्रु°, गुरु°, नारी° BHARTṢ. 2, 19. पौर° R. 1, 17, 13. वणिगजन 1, 96. MĀLAV. 67, 21. रातसी° R. 5, 18, 12. प्रूदजनसंनिधौ M. 4, 99. द्विजातिजनवत्सल N. 12, 58. द्विजानाः BHĀG. P. 2, 7, 38. स्वजनजन *die Verwandten* MĀKĀH. 8, 19. दासजन *ein Slave* VIKR. 54. in Verbind. mit Völkernamen: उशीनरजनाः VARĀH. BRH. S. 4, 22. कैकयजनाः 3, 74. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 13, 6794. R. 2, 37, 27. 57, 7. VARĀH. BRH. S. 24, 20. KATHĀS. 14, 16. Im Besond. α) पञ्च जनाः *die fünf Menschen- stämme*, — *Völker* (s. u. कृष्टि): जना यद्ग्रिमयंजत् पञ्च RV. 10, 45, 6. 3, 37, 9. 8, 32, 22. 9, 65, 23. 92, 3. 10, 53, 4, 5. Nir. 3, 8 u. Erl. dazu MBh. 3, 14160. Vgl. पञ्चजन, पाञ्चजन्य. — β) दैव्यो जनः, seltener दैव्यो जनः, *das Göttervolk, die Götter*: यत्किं चेदं दैव्ये जनं ऽभिद्रोहं मनुष्यांश्चरामास RV. 7, 89, 5. 4, 54, 3. स (अग्निः) यत्तदैव्यं जनम् 5, 13, 3. 1, 31, 17. 44, 6. 43, 9. 10. 2, 30, 11. 6, 16, 6. 52, 12. अस्तावि जना दैव्यो गयेन 10, 63, 17. भुवो जनस्य दि-व्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतः 6, 22, 9. 9, 91, 2. Nach M. MÜLLER in Z. d. d. m. G. 9, XXII soll der Ausdruck auch *göttlicher Mensch* so v. a. *der himmlische Agni* bedeuten. — γ) bisweilen, ohne nähere Bezeichnung durch ein Pronomen, so v. a. *die im Augenblick Jmd zunächst ste- hende Person, diese Person hier, dieser —, diese hier*: किं नु मे मरुणां श्रेयः परित्यागो जनस्य वा (hier versteht Nala u. जन *seine Gattin*) N. 10, 10. का वयं का परात्मन्मयो मृगशत्रेः सममेधितो जनः ÇĀK. 51. पृष्टा जनेन (von ihren beiden Freundinnen) समडुःखमुखेन बाला नेयं न वदत्य-ति मनेगतमाधिकेतुम् 59. एवं जनाः (geht auf Vidūshaka, der so ebenge- sprochen; WEBER: *die Leute*) गृह्णाति MĀLAV. 16, 6. Vgl. तस्मिञ्जने VIKR. 30 und जनान्तिकम्. — δ) अयं जनः so v. a. *Unsereins, wir, ich*: अनायस्य जनस्यास्य दुर्बलस्य तपस्विनः । यो गतिः शरणां चासीत् R. 2, 41, 2. अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितं घ्नन्तं जनाः ऽयं हि मिषन्न पश्यति BHĀG. P. 5, 48, 3. अनुशयततद्दुःखस्तवावदनुकम्प्यतामयं जनः *ich* ÇĀK. 85, 16. नन्वयमारुध-यिता जनस्तव समापे वतते 39, 13. जनमिमं च पातयितुम् 117, 59, 13. RAGH. 8, 80. VIKR. 29, 16. MĀLAV. 26, 28, 28. Vgl. ὄδὲ ἀνὴρ, *hic homo*. — ε) *Einer aus dem Haufen, ein gemeiner Mensch* (vgl. पृथजन) H. an. MED. KIR. 2, 42. 47. — b) *die jenseits des Maharloka gelegene Welt* H. an. MED. पात्युष्मणां मरुलीकाज्जनं भृगवादयो ऽर्दिताः BHĀG. P. 3, 11, 29. SKANDA-P. im ÇKDR. u. जनलोक. जनालय pl. *die Bewohner dieser Welt* BHĀG. P. 3, 11, 31; vgl. जनत्, जनलोक, जनोलोक, जनस्. — 2) f. जना *Geburt, Entstehung* VOP. 26, 192. — Vgl. अतःपुरजन, इतर°, कुल°, गुरु°, तिरा°, तिर्पजन, दुर्जन, देव°, निर्जन, परि°, पुण्य°, पूर्व°, सजन, स्व° u. s. w.

2. जनं m. N. pr. eines Mannes g a ṇ a अश्वादि zu P. 4, 1, 110. mit dem patron. ÇĀRkarakshja ÇAT. BR. 10, 6, 1, 1. KHĀND. UP. 5, 11, 1.

जनंसहं (जनम्, acc. von जन, + सह) adj. *die Geschöpfe bewältigend*, von Indra RV. 2, 21, 3.

जनक (von जन्) P. 7, 3, 35, Sch. 1) adj. *zeugend, erzeugend, verursa- chend*: तनुष्क्रः स्त्रीजनकः VARĀH. BRH. S. 67, 15. डुःख° MBh. 4, 1456.

— 2) m. a) *Vater* AK. 2, 6, 1, 28. 1, 1, 1, 17. 7, 12. H. 556. 6. an. 3, 42. MED. k. 89. HARIV. 982. R. 6, 3, 45. PAÑKĀT. V, 19. 97, 12. RĀGA-TAR. 1, 98. DHŪRTAS. 83, 14. Vgl. कृतात्जनक. — b) *oxyt. N. pr. eines Königs von Videha (Mithilā)* H. an. MED. ÇAT. BR. 11, 3, 1, 2. 4, 2, 17. 14, 5, 1, 1. 6, 1, 1. MBh. 3, 8089. 12, 3665. fgg. 5924. 6640. 7883. 10699. 11545. fgg. 11855 (Verfasser eines Çāstra). 14, 888. fgg. HARIV. 9253. Ganaka